कमलेश्वर के उपन्यास और आर्थिक विपन्नता (डाक बंगला के संदर्भ में)

डॉ. मा. ना. गायकवाड
कै. व्यंकटराव देशमुख महाविद्यालय,
बाभळगाव, ता. जि. लातूर

साहित्य में किसी भी लेखक अपनी छवि उनके साहित्य में किसी न किसी रूप में छा जाती है। यह स्वाभाविक भी है। लेखक के बचपन के संस्कार ही उनको चोटी पर पहुँचा देते हैं। शायद इसीलिए लेखक के विचारों में भिन्नता दिखाई देती है। कवि हो तो कविता पर, कहानीकार हो तो कहानी में, उपन्यासकार हो तो उपन्यास में बचपन में छाए हुए चित्र उनके साहित्य में निरंतर मात्रा में आते हैं। यही बात कमलेश्वर के लिए भी लागू होती है। कमलेश्वर का अलग से परिचय देना मुझे ठीक नहीं लगता। शायद ही कोई ऐसा हिंदी प्रेमी हो जो कमलेश्वर को नहीं जानता। श्रेष्ठ कहानीकार, श्रेष्ठ उपन्यासकार, श्रेष्ठ आलोचक के रूप में उनकी ख्याति संपूर्ण भारत वर्ष में फैली हुई है।

कमलेश्वर ने बचपन बहोत ही कठिनाइयों का सामना किया है। बचपन में ही पिता का साया सिर से उठ गया था। उनकी माँ शान्तिदेवी में बहुत हिम्मत थी। मेहनत व संघर्ष करके उनकी माँ ने परिवार का भरण-पोषण किया। कमलेश्वर अपनी माँ की तरह जीवन की हर कठिनाईयों झेलने के आदि थे। कमलेश्वर की माँ उन्हें बचपन में कहानियाँ सुनाया करती थी। और कहती थी कि, आगे तुम उन्हीं कहानियों को विशद करके लिखना कमलेश्वर कहानी का आशय समझ जाते थे और आगे लिखते रहे। कमलेश्वर ने ऐसे वातावरण् में शिक्षा प्राप्त की जहाँ पर न तो फिस के लिए पैसे थे ना कोई किताबें थी और ना परीक्षा के समय कोई पीठ थपथपाने वाला होता। उनके मानसिक और शारिरिक चोटे सहने की शक्ति अधिक नीडर बनती गई। इसीलिए वह स्वभाव से अत्यंत संवेदनशील, भावप्रवण एवं गंभीर व्यक्ति बन गये थे।

प्रस्तुत शोधालेख में कमलेश्वर के उपन्यास में आर्थिक विपन्नता के संदर्भ में सोचा जाएगा। कमलेश्वर के उपन्यास के पात्र भी उनके समान आर्थिक विपन्नता से जर्र-जर्र हैं। उपन्यास किसी भी विषय पर निर्भर हो उसमें आर्थिक विपन्नता दिखाई देती है। जिसमें उनका 'डाक बंगला' उपन्यास प्रमुख है। उपन्यास की नायिका 'इरा' पूँजीवादी अर्थव्यवस्थ से प्रभावित नायिका आर्थिक स्थिति के कारण ही विमल, महेंद्र बतरा, डॉक्टर चंद्रमोहन और मेजर सोलंकी के सम्पर्क में आती है। उपन्यास में आर्थिक संघर्ष करते हुए छात्र उस स्थिति तक पहुँच जाते हैं। जहाँ उनके लिए सिर्फ बच जाता है, निरर्थकता का बोध नायिका इरा को आर्थिक संघर्ष की प्रक्रिया के परिणाम स्वरूप ऐसी-ऐसी स्थितियों से गुजरना पडता है, जहाँ से जीवन की सार्थकता काफी दूर चली जाती है जिसे पकडना असंभव है।

नायिका इरा आर्थिक विपन्नता के कारण डाक बंगले में जाकर अनेक पुरुषों से रिश्ता बनाती है। वह अपने चरित्र और भविष्य के बारे में तनिक भी नहींसोचती। हर नया पुरुष उसे जिंदगी का नया अध्याय लगता था। यह बात साफ जाहिर है यदि इरा आर्थिक संपन्न होती तो रास्ता कभी नहीं अपनाती क्योंकि शरीर से भी पेट आग की दाहकत अधिक होती है। इस उपन्यास में निम्न-मध्य वर्ग की आर्थिक स्थिति का एवं उसके फलस्वरूप जीवन के बदलते मूल्यों का चित्रांकन प्रभावी ढंग से किया है। डॉ वीरेंद्र सक्सेना का कथन है कि, "डांक बंगला में आर्थिक

समस्या दूसरी समस्याओं का आधार लेकर उद्घटित हुई है। इसके माध्यम से नारी जीवन की असहाय और दयनीय परिस्थितियों को चित्रित किया गया है तथा सांकेतिक पद्धति से सुरक्षा की कामना का आर्थिक पक्ष स्पष्ट हुआ है।" (डॉ. वीरेंद्र सक्सेना, 'हिंदी लघु उपन्यास विद्याविहार 106/145, गांधीनगर, कानपूर, पृ. 229) इरा कई बार पुरुषों के प्रेमभरे ढोंग से छली जाती है। उसका मांसल सौंदर्य हर व्यक्ति को प्रभावित करने की क्षमता रखता है। वह अपने पिता से विद्रोह कर विमल के साथ विवाह के बगैर रहने लगती है। मात्र आर्थिक विपन्नता के कारण ही स्त्री असामजिक कदम उठा सकती है। आर्थिक कठिनाइयाँ इरा और विमल के सहवास को सुखी नहीं बता पाती तो विमल आर्थिक गुत्थियाँ सुलझाने के लिए इरा को महेंद्र बतरा के यहाँ नौकरी दिलवाता है। आर्थिक विपन्नता के कारण ही इरा के भोग्या बनकर ही रह जाती है, जिससे, बतरा, हो महेंद्र हो सभी एक जैसे उसे नजर आते हैं। इस जहाँ में ..... और धन के बलबूते पर यहाँ पुरुष स्त्री को खरीदना चाहता है। उपन्यास के चौथे अध्याय में भी स्पष्ट किया गया है कि, बुर्जुआ समाज व्यवस्था में पाँच पुरुष द्वारा सतायी गयी स्त्री पुरुष से बदला लेना चाहती है। इस सामाजिक व्यवस्था तथा आर्थिक विषम अवस्था में पिसी गई युवती है। पुरुष के बारे में वह सोचती है कि, "हर आदमी को देखकर मन में आता था, उससे नाटक करूँ, गले में बाँहें डालकर कहूँ, मैं तुम्हें प्यार करती हूँ.. और जब वह मुझे घर ले जाए और मेरी ओर बढे तो उसका गला घोंट दूँ" (कमलेश्वर 'डाँक बंगला' पृष्ठ 72-73) इरा के चरित्र का अध्ययन करें तो यह स्पष्ट होगा कि, इरा के जीवन में जितने भी पुरुष आये और जिनके साथ वह अपना आंतरिक सम्बंध स्थापित नहीं कर सकी, उसके मूल में आर्थिक कारण ही है। चाहे विमल हो, बतरा हो, या मेजर। यह सभी पुरुष सामंती विचारधरा में जीवन का मेरुदंड अर्थ है। अर्थ की प्राप्ति और दिन पर दिन आर्थिक उन्नति मात्र ही सामंतवादियों का लक्ष्य है। इरा के जीवन में जितने भी परिवर्तन आये हैं। उन परिवर्तनों के मूल में आर्थिक संघर्ष ही है। इरा की मानसिक स्थिति भी इसका कारण हो सकती है किन्तु इरा की मानसिक स्थिति का सूक्ष्म अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि हर बिंदू पर अर्थ की महत्ता ही प्रधान है। इरा के जीवन में आये हुए सभी पुरुष पात्र कहीं न कहीं आर्थिक परिवेश से जुडे हुए हैं। विमल के पास अर्थ का अभाव था तो बतरा और मेजर के पास अर्थ का प्रभाव था। दोनों ही स्थितियों में अर्थ महत्वपूर्ण है। यही कारण कि उपन्यास का प्रत्येक चरित्र आर्थिक परिवेश से जुडा हुआ प्रतीत होता है।

आर्थिक अभाव और जीवन की नीरसता से इरा ऊब जाती है। चंद्रमोहन और इरा के बची के वर्तन से साफ-साफ पता चलता है कि, इरा अपनी आर्थिक परिस्थितियाँ के प्रति सदा सचेत रही है। वह सोचती है कि चंद्रमोहन का पैसा उसके लिए जिंदगी का सहारा बन सकता है। यह जानते हुए भी डॉक्टर चंद्रमोहन संतानवाला था। उसे एक स्त्री शरिर की आवश्यकता है जो उम्र से पचास से अधिक है। आर्थिक विवशता को जानकर कवेल मात्र अर्थ की सुविधा के लिए इरा ने चंद्रमोहन के यहाँ की नौकरी स्वीकार की थी और अन्त में विवश होकर विवाह के बंधन में बंध जाती है।

उपन्यास में एक नया आयाम प्रस्तुत किया है, वह है 'पेड वाईफ'। उपन्यास की शीला अपने जीवन में पैसे को सबसे अधिक महत्व देती है। भारत-पाक बँटवारे के समय शीला अपनी बहिनों तथा माँ को बचाकर किसी प्रकार भारत ले आयी थी। इस बीच आर्थिक ठिनाईयों के कारण वह शरीर व्यापार करने पर मजबूर हो जाती है। अपनी माँ से बहाना बनाती है कि उसकी नौकरी दौरे पर रहने की है। घर से चार-चार छे-छे महीने बाहर रहकर कोई नौकरी नहीं करती बल्कि भिन्न-भिन्न व्यक्तियों की अस्थाई बीवी बनकर रहती है। जब तक वे चाहते तब तक उनके पास रहती है। यही उसकी नियति बन जाती है। "वह घर में बीवी का नकाब लगाकर रहती है और घर का इस तरह ध्यान रखती है जितना की बीवियाँ भी नहीं रख सकती। अपनी

शारीरिक एवं आर्थिक जरुरतों को पूरा करने का यही एक साधन है इसके पास।" (कमलेश्वर : डाक बंगला- राजकमल-दिल्ली, पृ. 62) अत: शीला एक 'कॉल-गर्ल' की भाँति घर-घर में पति-पत्नी का खेल खेलती है। इसके बदले में उसे आर्थिक संसाधन प्राप्त होते हैं। वह पैसों के लिए शुद्ध रूप से व्यावसायिक स्तर पर काम करती है। जो कार्य इरा करती है वही कार्य शीला तटस्थ भाव से अर्थार्जन के लिए करती है।

कमलेश्वर ने 'डाक बंगला' उपन्यास में प्रगतिशील विचारों को विमल के माध्यम से व्यक्त किया है। लेकिन उसका मूलाधार अर्थ ही है। देश के लाखो जवान अपने जीवन में असफल होते हैं। वे किसी भी असामाजिक तत्वों का रास्ता अपनाते हैं। व्यक्ति के जीवन मे अर्थ की कमी ना हो तो उसे समस्याओं का सामना करना नहीं पडता है। इस और शीला जैसे पात्र हर एक गाँव में पाये जाते हैं। उन्हें कोई शौक नहीं है कि, हर एक एक शैक बनना। इरा चाहती है कि वह भी सुखी जीवन बिताए। शीला के साथ भी कोई विवाह करने के लिए तैयार नहीं है। अत: यह परिणम आर्थिक विपन्नता का ही है।

संदर्भ साहित्य :

1. डॉ. वीरेंद्र सक्सेना, 'हिंदी लघु उपन्यास' विद्याविहार 106/145, गांधीनगर, कानपूर, पृ. 229
2. कमलेश्वर 'डाँक बंगला' पृष्ठ 72-73
3. कमलेश्वर : डाक बंगला- राजकमल-दिल्ली, पृ. 62

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com